सर्दियाँ आ गयी हैं | रोज सुबह रजाई से बाहर निकलते ही इस बात का पहला एहसास मकान का ठंडा फर्श दिलाता है, जब मैं अर्धनिद्रा में पैर कि अँगुलियों से चप्पल तलाशता हूँ | यकीन मानिए, कितनी ही बार उस अलार्म घडी को तोड़ देने का मन करता है जिसने इतने सारे लोगों की सुखद नींद को समय का गुलाम कर दिया |

पर कहानियाँ सुनने में रुचि है मेरी | और घर में पड़ा टेलीविजन रोज एक सा राग अलापता है, उसमे कहानियां कहाँ आती हैं आजकल? उस से तो कब का ऊब गया हूँ, उसकी ओर देखता हूँ तो एक उदासीन भाव से | बरामदे में आज भी कबूतर दम्पति में अनबन हुई है शायद, एक कबूतर बार बार घर आता है, और दूसरी उसे डरा कर अपने घरोंदे से बहार खदेड़ देती है | मुझको दोनों बरामदे के दो किनारों से ताकते हैं, आपस में फिर भी बोलचाल नहीं करते, ऐसा लगता है जैसे ठंडी आहें भर रहे हों |

कहानियां घर से निकलने पर शुरू हो जाती हैं | चलते चलते कोई भी व्यक्ति मेरे होंठों पर कोई धुन छोड़ जाता है, जिसे फिर मैं दिन भर के लिए गुनगुनाता रह जाता हूँ | संगीत भी एक सफर की तरह है, कितने असंबद्ध तार जोड़ देता है, बस यों ही | और जब सफर रोज का हो, कुछ अनजान राही जाने पहचाने अजनबी हो जाते हैं | रोज दफ्तर से घर निकलते समय विपरीत दिशा में जा रहे राहगीरों को क्षण भर के लिए देखता हूँ |

*“उनसे नज़रें जो मिलीं, रोशन फिजाएं हो गयी, आज जाना इश्क की जादूगरी क्या चीज़ है...”*

कुछ चेहरे नियमित रूप से दिखते हैं | कोई रोज आपके सामने से गाना गुनगुनाते हुए गुज़रे, तो क्या समझोगे? यदि धुन पकड़ने लगो तो यह तो न सोचोगे के तुम्हारे लिए ही गा रहा है?

*“जो मेरा हो नहीं पायेगा, इस जहां में कहीं, रूह बन कर मिलूँगा उसको, आसमान में कहीं...”*

कितने राहगीरों को पलट कर देखा होगा मैंने कि कहीं वे पलट कर मुझे तो नहीं देख रहे, कि देखो! सरफिरा पागल जा रहा है, बेसुध हो गुनगुना रहा है | कभी ऐसा होता भी है, और मुझको हंसी आ जाती है | नज़रें चुराने में भी कितनी ही कहानियां बन गयी होंगी | बस ऐसे ही धुनों का लेन देन चला रहता है हमारे बीच | उनमे से कुछ पथिक वही गीत ले कर घर पहुंचते होंगे | संगीत संक्रामक भी है |

*“सुहाना सफर और ये मौसम हसीं...”*

फुटपाथ पर चलते हुए क्या सोचते होंगे लोग? मैं ज्यादा नहीं सोचता, अपितु खेलते हुए चलता हूँ | फुटपाथ सीमेंट के सांचों से बना रहता है, और खेल का नियम सरल, हर सांचे में एक ही पग रख कर आगे बढ़ना होगा, और यदि बीच में दो सांचे टाप सकें तो बोनस अंक | मेट्रो कब पहुँच जाता हूँ कुछ पता ही नहीं चलता | मेट्रो तो और भी रोचक जगह है, परन्तु उसके बारे में अभी नहीं, आजकल ठण्ड बढ़ने लगी है, ओस भी गिरने लगी है | ठण्ड से ज्यादा ओस हानिकारक है | घर देर रात से पहुंचना ठीक न होगा |